हिन्दी–पत्रकारिता इतिहास के आइने में

डॉ0 अवधेश कुमार श्रीवास्तव

प्राचार्य
रघुवीर महाविद्यालय,
रघुवीर नगर, थलोई मछलीशहर, जौनपुर
मो0 नं0– 9450896029

हिन्दी–पत्रकारिता का जन्म हिन्दी प्रदेश से दूर 'कलकत्ता' नगरी में हुआ था प्राप्त सामग्री के आधार पर हिन्दी का पहला पत्र 'उदत्तमार्तण्ड' था। इसका प्रकाशन ज्येष्ठ सदी, सं0 1883, ता0 30 मई 1826 को हुआ था।[1] लगभग डेढ वर्ष चलने के बाद यह बन्द हो गया। यह पत्र साप्ताहिक था। सन् 1826 से लेकर 1872 तक हिन्दी पत्रकारिता शैशवास्था में थी। इस अवधि में निकलने वाले उल्लेख पत्र निम्न है–

'बंगदूत' (1829), प्रजामित्र (1834), 'बनारस अखबार' (1845), 'मार्तण्ड' (1846), 'ज्ञानदीप' (1846), 'मालवा अखबार' (1849), 'जगदीपक भास्कर' (1849), 'सुधाकर' (1850), 'साम्ययदंण्ड मार्तण्ड' (1850), 'बुद्धिप्रकाश' (1852), 'ग्वालियर गजट' (1853), 'समाचार सुधावर्षण' (1854), 'प्रजाहितैषी' (1855) 'सर्वहितकारक' (1855), सूरज प्रकाश (1861), जगलाभ– चिन्तक (1861), सर्वोपकारक (1861), प्रजाहित (1861), लोकमित्र (1865), तत्वबोधिनी (1865), ज्ञानप्रदायिनी (1866) सोमप्रकाश (1866), सत्यदीपक (1866), वृतान्तविलास (1867), ज्ञानदीपक (1867), कविवचनसुधा (1867), धर्मप्रकाश (1867), विद्याविलास, (1867), वृतान्तदर्पण (1867), विद्यादर्श (1869), ब्रह्मज्ञान प्रकाश (1869), पापमोचन (1869), जगदानन्द (1869), जगत प्रकाश (1869), अलमोड़ा अखबार (1870), आगरा अखबार (1870) बुद्धिविलास (1870), हिन्दू प्रकाश (1871), प्रयागदूत (1871), बुन्देलखण्ड अखबार (1871) प्रेमपत्र (1872),[2] उपर्युक्त पत्रों में दैनिक पत्र केवल एक था समाचार सुधावर्षण। शेष मासिक या साप्ताहिक थे। बनारस अखबार (1845) काफी जोरदार था। कविवचन सुधा (1867) भारत की प्रतिभा से प्रकाशित होकर नये युग की सूचना दे रही थी।

हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में भारतेन्दु का आगमन एक ऐतिहासिक घटना थी। 'कविवचन सुधा' हिन्दी नवजागरण का प्रतीक था। इसके सम्बन्ध में डॉ0 रामविलास शर्मा ने लिखा है– ''कविवचन सुधा जनता के हितों के लिए लड़ने वाले निर्भय सैनिक की तरह थी।[3] 1874 में हरिश्चन्द्र मैगजीन का प्रारम्भ हुआ। इसके प्रकाशन के साथ हिन्दी भाषा को एक निश्चित रूप मिला। 1874 ई0 में हरिश्चन्द्र मैगजीन का का नाम हरिश्चन्द्र चन्द्रिका, कर दिया गया। इसमें साहित्य, विज्ञान, धर्म, राजनीति, पुरातत्व नाटक, कविता, आलोचना, हास्य व्यंग आदि सभी विषयों की सामग्री प्रकाशित होती थी। 1874 ई0 में ही भारतेन्दु ने

Scanned with CamScanner

महिलाओं के लिए बालबोधिनी का प्रकाशन आरम्भ किया। इन पत्रिकाओं के द्वारा उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में युग–निर्माण का कार्य किया। 1873 ई0 से लेकर 1900 ई0 तक हिन्दी पत्रकारिता उन्हीं के आदर्शो पर चलती रही। इस अवधि के अन्तर्गत निम्नलिखित महत्वपूर्ण पत्रिकाएं प्रकाशित हुई–

भारतमित्र, 1877, हिन्दी प्रदीप 1877, उचित वक्ता 1878, आनन्द कादम्बिनी 1881, प्रयाग समाचार (1882), हिन्दोस्थान 1883, पीयूष प्रवाह (1884) शुभचिन्तक 1888, हिन्दी बंगवासी 1890, कवि व चित्रकार 1891, साहित्य– सुधा–निधि 1894। हिन्दोस्थान 1885 ई0 में काला–कांकर से निकलने लगा इसके पहले यह लन्दन में हिन्दी, अंग्रेजी दो भाषाओं में निकलता था। 1895 ई0 में काशी से नागरी प्रचारिणी पत्रिका तथा 1900 ई0 में प्रयाग से सरस्वती के प्रकाशन के साथ हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ा। 1902 में समालोचक 1905 में इतिहास और 1909 में इन्दु के प्रकाशन के साथ हिन्दी में गम्भीर साहित्य की सृष्टि होने लगी।

1921 ई0 तक आते–आते साहित्यिक और राजनीतिक पत्रों की दो धाराएं हो गई। राजनीतिक क्षेत्र में अभ्युदय (1905) प्रताप 1913, कर्मयोगी 1914, विश्वमित्र 1916, स्वतन्त्र 1920। द्वितीय महायुद्ध के कारण इनमें अत्यधिक उत्साह आ गया था।[4] 1921 के बाद साहित्य के क्षेत्र में माधुरी 1823, चांद 1923, मनोरमा 1924, विशाल भारत 1925, कल्याण 1926, सुधा 1927, त्यागभूमि 1928, हंस 1930, कमला 1939, मधुकर 1940, विश्व–भारती 1942, कुमार 1944, जया साहित्य 1945, हिमालय 1946, प्रतीक 1947 आदि पत्रिकाओं ने विशेष ख्याति प्राप्त की।[5] दैनिक पत्रों में हिन्दी 'आज' ने पथ–प्रदर्शक का कार्य किया। उसकी परम्परा में सैनिक 1928, शक्ति 1930, प्रताप 1931, नवयुग 1932, नवराष्ट्र 1933, नवभारत 1934, अधिकार 1938, विश्वमित्र (बम्बई 1941, और दिल्ली 1942), संसार 1943 नया हिन्दुस्तान 1944 जयहिन्दा, 1946 और सन्मार्ग 1946 आदि दैनिक पत्र प्रकाशित हुए।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद त्रैमासिक और मासिक दोनों प्रकार की साहित्यिक और शोध–पत्रिकाओं में एक नया उत्साह जागृत हुआ। नागरी–प्रचारिणी पत्रिका (काशी), हिन्दी अनुशीलन (प्रयाग), सम्मेलन पत्रिका इलाहाबाद, भारतीय–साहित्य (आगरा), राजस्थान भारती (बीकानेर) मरूभारती (जयपुर), हिन्दुस्तानी (इलाहाबाद), हिन्दी–विश्वभारतीय (शान्ति निकतेतन), समन्वय (आगरा) आदि शोध पत्रिकाएं नये विश्वास के साथ हिन्दी साहित्य में तत्पर हुई। थी।

विगत बीस वर्षो में पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन के क्षेत्र में कुछ विशेष प्रवृत्तियां विकसित हुई। पहली यह कि पत्र पत्रिकाओं का या तो व्यवसायीकरण हुआ। दूसरी बात यह कि पत्रिकाओं के प्रकाशन के साथ अनियतकालिकता की मुहर लगती जा रही है। इस समय साहित्य की उल्लेखनीय पत्रिकाओं में पहल जबलपुर, साक्षात्कार भोपाल, संचेतना (दिल्ली), हंस (दिल्ली), मधुमती (उदयपुर), सम्बोधन (राजस्थान), हिमप्रस्थ (शिमला), दस्तावेज (गोरखपुर), वर्तमान साहित्य (गाजियाबाद), अक्षरा (भोपाल), अन्यथा (लुधियाना), आदि प्रमुख है।

Scanned with CamScanner

अशान्ति के बावजूद साहित्यिक पत्रिकाओं के प्रकाशन के क्षेत्र में हिमाचल प्रदेश से सेतु–शिमला तथा ईरावती धर्मशाला दो पत्रिकाएं निकल रही है। बिहार पटना से कसौटी, आलोचना, जमशेदपुर से दस्तक, शब्द–कारखाना, जमालपुर बिहार, जमालपुर मुंगेर से संवेद और धनबाद से सृजन–परिवेश, भोपाल से वसुधा और समरलोक, इन्दौर से आवेग, रायपुर से अक्षरपर्व, खण्डवा से अक्षत जैसी पत्रिकाएं निकल रही है। सीकर राजस्थान से तटस्थ (त्रैमासिक) और अहमदाबाद गुजरात से आकार ये दो पत्रिकाएं प्रकाशित हुई। कोलकाता के भारतीय भाषा परिषद से प्रकाशित (वागर्थ) मासिक एक स्तरीय और चर्चित पत्रिका है। अव ज्ञान–विज्ञान की विविध विषयों से सम्बद्ध पत्रिकाएं हिन्दी में प्रकाशित होने लगी है। इनमें अग्रहायण लखनऊ, विज्ञान लोक आगरा, विज्ञान प्रगति, दिल्ली, विज्ञान–परिषद अनुसंधान पत्रिका, प्रयाग, वैज्ञानिक मुम्बई, इंजीनियरी पत्रिका, कलकत्ता किसान भारतीय पन्तनगर, ऊर्जा, अजमेर उल्लेखनीय है।

अन्त में यह नहीं कहा जा सकता है कि हिन्दी–पत्र पत्रिकाओं का भविष्य उज्ज्वल नहीं है। क्योंकि पत्रिका के प्रकाशन का क्रम अटूट है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. समाचार पत्रों का इतिहास, अम्बिका प्रसाद वाजपेयी, पृ0– 93
2. आलोचना, इतिहास, विशेषांक, डॉ0 राम रतन भटनागर।
3. भारतेन्दु हरिश्चनद्र और हिन्दी– नवजागरण समस्याएं, पृ0– 100
4. हिन्दी का गद्य साहित्य, डॉ0 रामचन्द्र तिवारी, पृ0– 899 एवं 900
5. समाचार पत्रों का इतिहास, अम्बिका प्रसाद वाजपेयी, पृ0– 331

Scanned with CamScanner